INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

सामाजिक माध्यमों का शैक्षिक कार्य हेतु उपयोग

(Use of Social Media for Educational Purposes)

अनन्त प्रकाश शुक्ल
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र,
सैम ग्लोबल विश्वविद्यालय ,
भोपाल (मध्य प्रदेश, भारत)

डॉ. प्रभाकर सिंह
प्राध्यापक एव शोध निर्देशक,
सैम ग्लोबल विश्वविद्यालय ,
भोपाल (मध्य प्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/11.2022-86655488/IRJHIS2211011

सारांश :

प्रस्तुत अध्ययन समाजिक माध्यमों का वर्तमान समय में शैक्षिक कार्यों में किस प्रकार उपयोग किया जा रहा है और वर्तमान समय तथा प्राचीनकाल में जो परिवर्तन दिखाई पड़ रहे हैं उसमें सामाजिक माध्यमों का क्या उपयोग है, पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। कोविड–१९ महामारी में जिस प्रकार सामाजिक माध्यमों ने न केवल भारत अपितु पूरे विश्व में शिक्षा को एक नई दिशा देने का कार्य किया। इन्हीं सारी चीजों को लेकर कुछ सुझावों का उल्लेख किया जा रहा है जो साहित्यों के अंशों का एक मौलिक रूप है।

मुख्य शब्द : *सामाजिक माध्यम, सोशल मीडिया, शिक्षा, इण्टरनेट, ऑनलाईन*

प्रस्तावना :

वर्तमान समय में सामाजिक माध्यमों ने जब से हमारे जीवन में जगह बनाई है सब कुछ अलग सा दिख रहा हैं प्राथमिक विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक सोसल मीडिया की भूमिका माता–पिता, छात्र और शिक्षक को जानकारी साझा करने और एक नया समुदाय बनाने के तरीकों में सशक्त भूमिका अदा कर रहा है। ऑकड़े बताते हैं कि ९६ प्रतिशत छात्र जिनके पास इंटरनेट है वे कम से कम एक सामाजिक माध्यम का प्रयोग अवश्य कर रहे हैं इससे भी अधिक असाधारण बात ये है कि भले ही कुछ छात्र इसका उपयोग मनोरंजन के लिए करते हो पर उनमें से बहुत से ऐसे हैं जो इसका प्रयोग बहुत सारी सकारात्मक और उपयोगी गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु करते हैं।

शैक्षिक माध्यम :

प्राचीन काल में भारत के नालंदा और तक्षशिला आदि विश्व विद्यालय सम्पूर्ण संसार में उच्च शिक्षा के केन्द्र थे प्राचीन काल से पहले मौखिक एवं कंठस्थ रूप में शिक्षा प्रचलित थी धीरे–धीरे शिक्षा के स्वरूप और तौर तरीकों में बदलाव आया और

धीरे–धीरे शिक्षा उपकरणों के रूप में लिखित शब्दों का प्रयोग होने लगा जिसे शिक्षा की दूसरी क्रांति के रूप में देखा गया जिसके फलस्वरूप शिक्षा को अध्ययन हेतु घरों की दीवारों पेड़ों के पत्तों, गुफाओं की दीवारों पर संकेतों द्वारा लिखित रूप में दर्शाया जाने लगा तीसरी क्रांति मुद्रण के आविष्कार के साथ आयी तथा पुस्तकें उपलब्ध होने लगी।

इलेक्ट्रानिक्स तकनीकी क्षेत्र में आए विकासशील परिवर्तन चौथी क्रांति के सूचक थे इसके बाद रेडियो टेलीविजन आदि का प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में होने लगा कम्प्यूटर लैपटॉप, टेबलेट मोबाइल, स्मार्टफोन एवं सी०डी०, डी०बी०डी० आदि के आने से संचार के क्षेत्र में विकास हुआ जिसने ई–मेल वीडियो, ई बुक्स, ई शिक्षा ऑनलाइन शिक्षा और इण्टरनेट के माध्यम से विद्यालय एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नई क्रांति का उदय हुआ।

जब उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एरिक एश्वी ने १९६७ में चार क्रांतियों का उल्लेख किया तो उन्हें इस बात का आभास भी नहीं था कि चौथी क्रांति शैक्षिक क्षेत्र में पॉचवी क्रांति को जन्म देगी जिसके परिणाम स्वरूप संसार की लगभग सारी शिक्षा व्यवस्था का ब्यौरा जैसे शिक्षा दर्शन की विषय वस्तु, पाठ्यक्रम, शोध पत्र पत्रिकाएं, ई बुक्स, ई लाइब्रेरी आदि एक डिब्बे में बंद हो सकेगी और संसार का कोई भी व्यक्ति या विद्यार्थी कहीं भी किसी भी कोने में बैठकर आनलाइन अध्ययन के द्वारा बड़ी से बड़ी उच्च शिक्षा की डिग्री प्राप्त कर सकेगा उस समय ऐसी बातों पर लोग यकीन नहीं करते थे और मजाक समझते थे आज सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने साबित कर दिया है कि ये सभी बातें आधुनिक समय में सम्भव है।

हाल में हुए एक अध्ययन के अनुसार आज विद्यार्थी विद्यालयों में शिक्षकों एवं अपने सहपाठी से केवल एक तिहाई शिक्षा ही सीखते हैं बाकी का अध्ययन वे स्व अध्यन द्वारा प्राप्त करते हैं। आज मल्टीमीडिया और इंटरनेट के प्रयोग ने एक नए युग की शुरूआत कर दी है जिसने विद्यार्थियों और शिक्षकों में उम्मीद की नई किरण विखेर दी है।

सन् २०१९ में जब कोरोना महामारी ने पूरे विश्व में अपना पैर पसारा तो न केवल भारत अपितु विश्व के अनेकों देशों में न केवल उच्च शिक्षा संस्थान बल्कि माध्यमिक व प्राइमरी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र/छात्राओं ने इंटरनेट के माध्यम से पढ़ने में अपनी विशेष रूचि दिखाई। भारत में इंटरनेट के प्रसार के बाद सूचना और संचार क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। विकासशील देशों में भारत की गणना उन देशों में होती है, जहॉ इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या सर्वाधिक है।

सामाजिक माध्यमों का शिक्षा में उपयोग :

सोशल मीडिया या सामाजिक माध्यम विवेचना और अभिव्यक्ति की शक्ति के विकास का एक प्रभावी मंच है सोशल मीडिया को परस्पर संवाद का वेब आधारित एक ऐसा गतिशील मंच कहा जा सका है जिनके माध्यम से विद्यार्थी आपस में जानकारियॉ आदान प्रदान करते हैं और इस दौरान सृजित सामग्री में संशोधन भी करते हैं और फीड बैक भी देते हैं।

वर्तमान समय में दुनिया के अनेकों देश अपने सुविधानुसार सोशल मीडिया का प्रयोग अपने विचारों एवं भावनाओं के साथ शिक्षा सम्बन्धी उद्देश्यों को भी पूर्ण कर रहे हैं पहली बार नब्बे के दशक में १९९४ में जब पहली सोसल मीडिया जी०ओ० साइट के रूप में सामने आयी तब इसका उद्देश्य विचारों एवं भावनाओं को केवल आपस में साझा करने हेतु था शुरूआत में इसे मात्र ६ शहरों के इस्तेमाल हेतु बनाया गया था परन्तु आज पूरा विश्व सोशल मीडिया का उपयोग निर्विवाद रूप से कर रहा है। फेसबुक, ट्विटर, गूगल प्लस, व्हाट्सएप, लिंक्डइन, पिंटररेस्ट, स्काईराक, साय वर्ल्ड, क्यू–क्यू, और वे कोनेटाकटे आदि अनेकों ऐसे सामाजिक माध्यम है जिनका प्रयोग विश्व के विभिन्न देशों मे शिक्षा एवं मनोरंजन के लिए किया जा रहा है।

सोशल मीडिया का शिक्षा में उपयोग :

सोशल मीडिया शिक्षकों को कक्षा के बाहर होने पर भी छात्रों के साथ संवाद करने में सहायता प्रदान करता है। जैसे –

१. सोशल मीडिया प्लेटफार्म का उपयोग छात्रों को विश्वसनीय स्रोतों से असीमित संसाधन पाठ्य सामग्री प्रदान कर सकता है जिसका प्रयोग वो निबंध परियोजनाओं और प्रस्तुतियों में अपने पाठ्यक्रम के अनुसार कर सकते हैं।

२. सोशल मीडिया के माध्यम से छात्र नोट्स और हैण्ड आउट के पृष्ठों को देख सकते है। ।

३. शिक्षा में सामाजिक माध्यमों का उपयोग आज छात्र/छात्राऐं शिक्षक और अभिभावक और अधिक उपयेागी जानकारी प्राप्त करने शिक्षण समूहों और अन्य शैक्षिक प्रणालियों से जुड़ने में मदद करता है जो शिक्षा को सुविधाजनक बनाता है।

४. छात्र यूट्यूब के माध्यम से आनलाइन ट्यूटोरियल स्काइप के माध्यम से विदेशों में विश्वविद्यालयों द्वारा दिए गए आनलाइन पाठ्यक्रमों और सामाजिक नेटवर्क के माध्यम से साझा किए जाने वाले संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला से लाभ उठा सकते हैं।

५. सोशल मीडिया का उपयोग कर छात्र अन्य माध्यमों की अपेक्षा जल्दी सीखते हैं।

६. सोशल मीडिया में विभिन्न विषयों पर छात्रों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाने की क्षमता है और ये नई रोशनीपूर्ण त्वरत समाग्री को प्रदान करता है तथा इन विषयों पर उत्तर देने हेतु विशेषज्ञों को शामिल करने का अवसर होता है। जिसकी छात्र को आवश्यकता होती है।

७. लर्निंग कॉलेज, फेसबुक, गूगल फ्लसग्रुप, गूगलमीट, जूम ऐप और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया के माध्यम से छात्र विद्यालय से जुड़ने की क्षमता रखता है और इन चैनलों का उपयोग कैम्पस समाचार का सम्प्रेषण करने, घोषणा करने, ऑनलाईन क्लास लेने और छात्रोपयोगी जानकारी प्राप्त करने हेतु किया जाता है।

८. यूट्यूब, फेसबुक या इंस्टाग्राम लाइव वीडियो जैसे सामाजिक माध्यमों के माध्यम से छात्रों और उनके संस्थान के बीच जुड़ाव कायम किया जा सकता है।

९. सामाजिक माध्यम जल्द संचार का एक मात्र चैनल या माध्यम है आज के आधुनिक युग में माता–पिता समायाभाव के कारण अपने बच्चों के विद्यालयी बैठक में सम्मिलित नहीं हो पाते किन्तु इन माध्यमों से बिना विद्यालय पहुँचे अपने बच्चों की गतिविधियों को जान सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. सोशल मीडिया सम्पर्क क्रांति का कल आज और कल लेखक स्वर्ण सुमन हार्पर हिन्दी १८ जुलाई २०१४

२. सिंह संचिता, सोशल मीडिया की सम्भावनाएं – बुक टी पब्लिकेशनप हाउस जनवरी २०१४

३. डॉ मालवीय रात्रीव, शैक्षिक तकनीकि एवं प्रबंधन – शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद २००९

४. डॉ० पाण्डेय राम सकल, शैक्षिक निबंध – विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, २००८

५. डॉ० कुलश्रेष्ठ एस०पी० – शैक्षिक तकनीक के मूल आधार।

६. कपिल हंस कुमार (२००२) : अनुसंधान विधियॉ।

७. एन० अकबर (२००१) : बच्चों के विकास का अनुसंधान।

८. सिंह, अरूण कुमार – मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ।

९. राय दीपक – सोशल मीडिया के उपयोग के बाद युवाओं की पुस्तकों से बढ़ती दूरी का अध्ययन।

१०. राय, उमेश कुमार – सोशल मीडिया का बढ़ता दायरा वरदान भी अभिशाप भी।